

7. 'लोग' / लोगन

मनखे संज्ञामन के पाछू 'लोग', लोगन के प्रयोग बहुवचन में होथे।

जइसे :-

मोई लोगन - माई लोग

भाई लोगन - भाई लोग

(ब) छत्तीसगढ़ी में संज्ञा के आधु में बहुवचन सूचक खुल्ला सब्द लगा के बहुवचन बनाये जाथे।

(i) 'गंज' (बहुत)

चिरई-घुरगुन के नाव के आधु में 'गंज' जोड़ के बहुवचन बनाये जाथे।

गंज - तितुर

गंज - छेरी

गंज - पड़की

गंज - फाफा

(ii) 'गजब'

सजीव-निर्जीव संज्ञा मन के आधु में 'गजब' लगा के बहुवचन बनाये जाथे।

गजब - लइका

गजब - धान

गजब - मनखे

(iii) 'खूब'

इसका उपयोग सजीव-निर्जीव सहित अन्य वस्तुओं के लिए भी किया जाता है।

जैसे :- खूब - मछली

खूब - आम

(iii) 'खूब'

येकर उपयोग सजीव-निर्जीव के सगे-संग दूसर जिनिस बर घलोक करे जाथे।

जइसे :- खूब - मछरी

खूब - आमा

खूब - पानी
खूब - धूप
खूब - ठंड

(iv) अड़बड़/अब्बड़/बड़

यह सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों के पहले प्रयुक्त होता है।

जैसे :- बहुत - आम
बहुत - लोग
बहुत - सियार
बहुत - लड़कियाँ
बहुत - चींटियाँ

(v) बड़ अकन/अब्बड़ अकन/बड़ अक

इसका प्रयोग केवल निर्जीव वस्तुओं की ज्यादा संख्या व मात्रा को बताने के लिए किया जाता है।

जैसे :- बहुत - सारा - आम
बहुत - सारी - इमली
बहुत - सारी - गुठली
बहुत - सारा - भौरा
बहुत - सारा - बीज

खूब - पानी
खूब - घाम
खूब - जाड़

(iv) अड़बड़/अब्बड़/बड़

ये सबो प्रकार के संज्ञा सब्द के आधु मं लगाये जाथे।

जैसे :- अड़बड़ - आमा
अड़बड़ - मनखे
अब्बड़ - कोलिहा
अब्बड़ - टूरी
बड़ - चाँटी

(v) बड़ अकन/अब्बड़ अकन/बड़ अक

येकर प्रयोग सिरिफ निर्जीव जिनिस के जादा अक ल बताये बर करे जाथे।

जइसे :- बड़ - अकन - आमा
अब्बड़ - अकन - अमली
बड़ - अक - गोही
बड़ - अकन - भौरा
बड़ - अकन - बीजा

(3) छत्तीसगढ़ी में बहुवचन को बताने के लिए अन्य प्रत्ययों और स्वतंत्र शब्दों के साथ-साथ द्विरुक्ति या पुनरुक्ति शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे :- बच्चे ही बच्चे
बकरी ही बकरी
सिपाही ही सिपाही
कीड़ा ही कीड़ा

(4) हिन्दी में परिणाम वाचक शब्द संज्ञा के पहले लगाने से एक से अधिक वस्तु होने का बोध कराता है।

जैसे :- थोड़ा सा धान
थोड़ी सी सब्जी
थोड़ा सा दाल
चुटकी भर नमक
खचाखच भीड़
ढूँस ढूँक कर भरा
हथेली भर प्रसाद
मुट्ठी भर चना
थैला भर बेर

(3) छत्तीसगढ़ी में बहुवचन ल बोध कराये बर दूसर प्रत्यय अऊ सब्द के संगे-संग द्विरुक्ति नइ ते पुनरुक्ति सबद बोले जाथे।

जैसे :- लईका च लईका
छेरी च छेरी
पुलिसे च पुलिस
कीरा च कीरा

(4) हिन्दी भाषा जइसे छत्तीसगढ़ी में परिणाम वाचक सब्द संज्ञा के आघु में लगाके एक ले जादा जिनिस होय के बोध कराथे।

जैसे :- थोड़कन धान
थोरिक साग
थोरिक दार
चुटकी भर नून
खचखच ले भीड़
ठसठस ले भरे
पसर भर परसाद
मुठा भर चना
झोला भर बोईर

जघा अऊ जिनिस के मुताबिक 'थोड़कन', 'थोरकन', 'थोरकिन', 'थोर अकन', 'थोरिक' के उपयोग करे जाथे।

(5) जोड़ी (युग्मक) शब्दों के लिए हिन्दी में 'जोड़ा', 'जोड़ी', 'जाँवर - जीवर' आदि का प्रयोग संज्ञा शब्द के पहले होता है।

जैसे :- जोड़ी हाथी
जोड़ी बैल
जुड़वा लड़का

(6) हिन्दी भाषा में कर्ता के वचन का प्रभाव क्रिया-रूप पर पड़ता है।

जैसे :-	पुरुष	एकवचन	बहुवचन
	उत्तम	मैं चला	हम चले
		मैं खाया	हम खाये
	मध्यम	तू चला	तुम चले
		तू खाया	तुम खाये
	अन्य	वह चला	वे चले
		वह खाया	वे खाये

(5) 'जोड़ी' में बताये बर (एक ले जादा) 'जोड़ा' 'जोड़ी' 'जाँवर-जीयर' के उपयोग संज्ञा सद् के आधु में करे जाथे।

जैसे :- जोड़ा हाथी
जोड़ी बइला
जाँवर-जीयर दूरा

(6) छत्तीसगढ़ी में कर्ता के वचन के असर क्रिया रूप में होथे।

जइसे :-	पुरुष	एकवचन	बहुवचन
	उत्तम	मैं/मेहा चलेंव	हमन चलेन
		मैं/मेहा खादेव	हमन खायेन
	मध्यम	तैं/तेहा चलेस	तुमन चलेव
		तैं/तेहा खायेस	तुमन खायेव
	अन्य	ओ/ओहा चलिस	ओमन चलिस
		ओ/ओहा खाइस	ओमन खाइन

(7) छत्तीसगढ़ी भाषा में 'वचन' बनाये के बहुत अकन नियम समें, जघा अऊ जिनिस के मुताबिक पक्का होथे।	
जइसे :- (i) दु ले जादा मनखे के संबंध एकेजन ले रहिथे, उहाँ 'एकवचन' होथे।	
<p style="text-align: center;"><u>हिन्दी</u></p> <p>(क) कुश के दादा महाराजा दशरथ है। (ख) सुरेश का भाई रमेश आया है। (ग) आग देवता है। (घ) हवा, आग और पानी के समान ताकतवर है।</p>	<p style="text-align: center;"><u>छत्तीसगढ़ी</u></p> <p>(क) कुस के बबा महाराज दसरथ आय। (ख) सुरेस के भाई रमेस आए हे। (ग) आगी देवता आय। (घ) हवा, आगी अऊ पानी जइसे बल वाला हे।</p>
(ii) छत्तीसगढ़ी में कोनो-कोनो 'संज्ञा' 'सब्द' मन दुनों बचन में एके जइसे रहिथें।	
जइसे :-	
<p style="text-align: center;"><u>हिन्दी</u></p> <p>(क) रावन की बीस आँखे थीं। (ख) मेरी नजरों से दूर हटो। (ग) बाल नाई ने काटा। (घ) बातें शुरू हुई।</p>	<p style="text-align: center;"><u>छत्तीसगढ़ी</u></p> <p>(क) रावन के बीस आँखी रिहिस। (ख) मोर नजर ले दुरिहा हट। (ग) चूँदी ल नाऊ काटिस। (घ) गोठ सुरु होइस।</p>
श्वॉस (सॉसा), प्राण (परान), हवा (हावा), कीमत (किम्मत), साहस (हिम्मत), सुविचार (सुम्मत), ओंठ (होठ), दर्शन (दरसन), रक्त (लहू), घलोक इंकर उदाहरण ए।	

(iii) छत्तीसगढ़ी में गुणवाचक 'संज्ञा' एक वचन में रहित है।
जैसे :-

हिन्दी

- (क) रामायण में बहुत विशेषताएँ हैं।
- (ख) आजादी में बड़ी खुशी है।
- (ग) उसका सीधापन मेरा मन मोह लिया।

(iv) द्रव्य वाचक संज्ञा शब्द मनके प्रयोग एक वचन में होते हैं।
जैसे :-

हिन्दी

- (क) इस वर्ष बहुत पानी गिरा।
- (ख) उसकी पूरी संपत्ति बरबाद हो गई।
- (ग) खून की धार बह गई।
- (घ) उसके पास बहुत सोना है।

(v) कोनो मेर जिनिस (द्रव्य), ह बंटाये अऊ नान-नान भागा में होते हैं, त आहा बहुवचन में होते हैं।
जैसे :-

हिन्दी

- (क) अपनी अँगुठियों को बेच डाला।
- (ख) लोहा इधर-उधर पड़ा है।
- (ग) प्याज का भाव बढ़ गया है।
- (घ) कंचा बिखर गया है।

छत्तीसगढ़ी

- (क) रमायेन में बड़कन बिसेसता हे।
- (ख) आजाद रहे में बड़ सुख हे।
- (ग) ओकर सिधाई मोर मन ल मोह डारिस।

छत्तीसगढ़ी

- (क) एसो अब्बड़ पानी गिरिस।
- (ख) ओकर जम्मो पूँजी नठागे।
- (ग) लहू के धार बोहागे।
- (घ) ओकर करा बिककट सोना हे।

छत्तीसगढ़ी

- (क) अपन मुंदरी मन ल बेंच डारिस।
- (ख) लोहा मन एति-ओति परे हे।
- (ग) गोंदली मन के भाव बढ़गे हे।
- (घ) बाँटी मन बगर गे हे।

(vi) हिन्दी का 'प्रत्येक' सभी और 'हर एक' को छत्तीसगढ़ी में 'परतेक' 'हर' व 'हरेक' भी सदैव एकवचन में होता है।

जइसे :-

हिन्दी

- (क) प्रत्येक बच्चे को पुस्तक मिला।
- (ख) प्रत्येक व्यक्ति का घर होगा।
- (ग) हर एक घर में खोजना।
- (घ) हर व्यक्ति को काम काज है।

छत्तीसगढ़ी

- (क) परतेक लईका ला पुस्तक मिलिस।
- (ख) हर मनखे के घर होही।
- (ग) हरेक घर मां खोजहू।
- (घ) हर मनखे के काम-बुता हे।

कारक

हिन्दी

जो शब्द किसी वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध व्यक्त करते हैं, वे कारक कहलाते हैं।

जैसे :-

1. राधा ने आम खरीदे।
2. पेड़ से पत्ते गिरे।

भेद :- कारक के आठ भेद हैं :-

1. कर्ता कारक
2. कार्य/कर्म कारक
3. करण कारक
4. सम्प्रदान कारक

छत्तीसगढ़ी

जेन शब्द ले कोनो डाड़ मं संज्ञा अऊ सर्वनाम के क्रिया के संबंध ल परगट करथे ओहा कारक कहाथे।

जइसे :-

1. राधा 'ह' आमा बिसाइस।
2. रूख 'ले' पत्ता गिरिस।

भेद :- कारक के आठ भेद हे :-

1. कर्ता कारक
2. कार्य/कर्म कारक
3. करण कारक
4. सम्प्रदान कारक
5. अपादान कारक

5. अपादान कारक
6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. सम्बोधन कारक

विभक्ति चिन्ह :- वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए जिन चिन्हों का उपयोग किया जाता है, उसे विभक्ति या परसर्ग कहा जाता है।

6. सम्बंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. सम्बोधन कारक

विभक्ति चिन्ह :- डाढ़ मं संज्ञा अऊ सर्वनाम के क्रिया ले संबंध ल बताये बर जेन चिनहा ल लगाये जाथे, ओला विभक्ति केहे जाथे।

कारक के चिन्ह

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
1. कर्ता ने	हा, हर
2. कर्म/को	ला
3. करण/से,के, द्वारा	ले
4. सम्प्रदान/को, के, लिए	बा, बर, ला, के खातिर, के कारन, हर, खातिर, सेती, संग, डाहर, किन, ले, अस, छोड़, अन, साम्हू,
5. अपादान/से	ले
6. सम्बन्ध/का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने	के/कर
7. अधिकरण/में, पर	मां, म, करा, कना (ऊपर, तरी, बाहिर, भीतर, खाल्हे, कारन, जिन, सेती, बूते, पाछू, पार, कोती, लंग, आगू, बीच, तीर)
8. सम्बोधन/हे ! अरे! ओ!	ए, ऐ, ओ, वो, रे एगा, एगो, अगो, गो, गोई, अवो, एवो हों, एजी, अजी, एया

<p>1) कर्ता कारक :- शब्द के जिस स्वरूप से क्रिया करने वाले को ज्ञान होता है, उसको कर्ता कारक कहते हैं। इसका चिन्ह 'ने' है।</p> <p>जैसे :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. कमल ने खाना खाया। 2. राधा ने शरारत की। 3. मैं मंदिर गया। 	<p>1) कर्ता कारक :- सब्द के जे रूप ले क्रिया काम करे के बोध होथे ओला 'कर्ता कारक' कहिथे। येकर चिनहा 'न' हे।</p> <p>जइसे :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. कमल ह जेवन करिस। 2. राधा ह उत्तईल करिस। 3. मे हा मंदिर गेंव।
<p>2) कार्य/कर्म कारक :- कर्ता को अपने काम को करने के लिए जिसकी ज्यादा जरूरत होती है, वह 'कर्म या कार्य' कारक कहलाता है। इसका चिन्ह 'को' है।</p> <p>जैसे :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. किसान ने धान को काटा। 2. कुत्ता ने बच्चे को काटा। 3. रमेसर ने पेड़ को काटा। <p>3) करण कारक :- कर्ता जिस साधन चीज से कार्य को पूरा करता है, उसको कारण कारक कहते हैं। इसका चिन्ह 'से' है।</p> <p>जैसे :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. किसान ने टंगिया से पेड़ काटा। 2. सिपाही ने चोर को डंडे से मारा। 3. राधा ने साँप को पत्थर से मारी। 4. हम लोग गुड़ से चाय बनाते हैं। 	<p>2) कार्य/कर्म कारक :- कर्ता ल अपन काम करे बर जेकर जादा जरूरत होथे, ओहा कार्य अउ कर्म कारक कहाथे। येकर चिन्हा 'ला' हे।</p> <p>जइसे :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. किसान ह धान ला काटिस। 2. कुकुर ह लईका ला काटिस। 3. रमेसर ह पेड़ ला काटिस। <p>3) कारण कारक :- कर्ता हा जेन जिनिस ले अपन काम बुता ल पूरा करथे, ओला 'करण' कारक केहे जाथे। येकर चिन्हा 'से' हे।</p> <p>जइसे :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. किसान हा टंगिया ले रूख काटिस। 2. पुलिस चोर ल डंडा ले मारिस। 3. राधा ह साँप ले पथरा ले मारिस। 4. हमन गुड़ ले चाहा बनाथन।

4) सम्प्रदान कारक :- जिन शब्दों से कर्ता द्वारा किसी दूसरे के लिए कार्य करने का बोध होता है, उसे 'सम्प्रदान' कारक कहा जाता है। इसका चिन्ह 'के लिए' है।

जैसे :-

1. राजगीर ने सेठ जी के लिए मंदिर बनाया।
2. मूर्तिकार को रहने की जगह दी।
3. मैंने अपनी बेटी के लिए झुमका बनवाया।
4. मुझे तुम्हारे कारण डाँट पड़ी।
5. गाँव के विकास के लिए मेहनत करनी होगी।
6. गुड़ के लिए गन्ना बोया।

5) अपादान कारक :- वाक्य में जिस शब्दों से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका चिन्ह 'से' है।

जैसे :-

1. कोयला खान से मिलता है।
2. पेड़ से पत्ते गिरते हैं।
3. नदियाँ पर्वत से निकलती हैं।
4. बोधन छत से कूद गया।
5. फल से बीज निकलता है।

4) सम्प्रदान कारक :- जेन सब्द ले कर्ता के कोनो दूसर बर काम-बुता करे के जानबो अऊ बोध होथे, ओहा 'सम्प्रदान' कारक कहाथे। येकर चिन्हा 'ब', बर, 'ला' के खातिर 'के कारन,' 'सेती', 'हर', 'खातिर' हे।

जइसे :-

1. राजगीर ह सेठ बर मंदिर बनाइस।
2. मूर्तिकार ल रहे बर जघा दिस।
3. में हा अपन नोनी खातिर झुमका बनवायेंव।
4. मोला तोर कारन डाँट परिस।
5. गाँव के बिकास खातिर मिहनत करे ल पड़ही।
6. गुड़ खातिर कुसियार लगायेंव।

5) अपादान कारक :- डाड़ मं जेन सब्द ले कोनो जिनिस के अलग होय के बोध होथे ओला अपादान कारक कहिथें। येकर चिनहा 'ले' हे।

जइसे :-

1. कोइला ह खदान ले निकलथे।
2. रूख ले पाना गिरथे।
3. नदिया पहार ले निकलथे।
4. बोधन छत ले गिर गे।
5. फल ले बीजा निकलथे।

6) सम्बंध कारक :- किसी वाक्य में एक संज्ञा या सर्वनाम का किसी अन्य संज्ञा या सर्वनाम से सम्बन्ध बताने वाले कारक को सम्बन्ध कारक कहा जाता है। इसका चिन्ह का, की, के, ना, नी, ने, रा, री, रे है।

जैसे :-

1. राधे का खेत बहुत बड़ा है।
2. यह मोहन का घर है।
3. वह अपने घर के पास था।
4. यह दान-पुण्य की गाय है।
5. यह धान की कोठी है।

7) अधिकरण कारक :- किसी वाक्य में शब्द के जिस स्वरूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसको अधिकरण कारक कहते हैं। इसका चिन्ह 'पर' है।

जैसे :-

1. किताब आलमारी में रखी है।
2. गहने पेटी में है।
3. गुड़ियाँ रसोईघर में है।
4. गहने संदूक में है।
5. मछली पानी में रहती है।
6. पैसा रास्ते पर पड़ा मिला।
7. लोटे को पत्थर पर रख दिया।
8. मेरे पास चकमक पत्थर है।
9. मेरे पास मोहरी बाजा है।

6) सम्बंध कारक :- कोनो डाड़ में एक संज्ञा नइ ते सर्वनाम के कोनो दूसर संज्ञा सर्वनाम ले सम्बन्ध बतइया कारक ल संबंध कारक केहे जाथे। जेकर चिनहा का, की, के, ना, नी ने, रा, री, रे, हे।

जइसे :-

1. राधे के खेत बहुते बड़का है
2. ये हा मोहन के घर ये।
3. ओ हा अपने घर के तिर में रिहिस।
4. येहा दान-पुन के गाय ये।
5. यहा धान के कोठी ये।

7) अपादान कारक :- कोनो डाड़ में सब्द के जेन रूप ले कोनो काम के कारन के बोध होथे, ओला अधिकरण कारक केहे जाथे। येकर चिनहा में, मा, करा, कर, कना, कोती, लंग, आगू, बीज, मंझोत, छोर, कोर, तीर, ऊपर, तरी, बाहिर, भीतर, खाल्हे हे।

जइसे :-

1. किताब आलमारी में रखाये हे।
2. गहना मन संदुक में हे।
3. हउला मन रंधनी में हे।
4. गहना मन संदुक में हे।
5. मछरी पानी में रहिथे।
6. पइसा रद्दा मा परे मिलिस।
7. लोटा ल पथरा में राख दिस।
8. मोर करा चकमक पथरा हे।
9. मोर कना मोहरी बाजा हे।

8) संबोधन कारक :- किसी वाक्य में शब्द के जिस रूप से किसी को संबोधित किया जाता है, उसको संबोधन कारक कहते हैं। इसके चिन्ह हे !, अरे !, ओ !, ओह !

जैसे :-

1. ओ ! लड़का इधर आ।
2. ओजी! तुम्हारी लाठी वहाँ पर पड़ी है।
3. ओ दादा ! आप कहाँ जा रहे हैं।
4. ओ जी ! चलो भोजन करना।
5. ओ बच्ची की माँ !
6. ओ रमौतीन ! राजू को भेजो तो।

8) संबोधन कारक :- कोनो डाड़ में सब्द के जेन रूप ले कोनो लं हुँत करे जाथे ओला संबोधन कारक कहे जाथे। येकर चिनका ए, ऐ, ओ, वो, रे, एगा, एगो, एवो, अगो, वो, गोई, अवे, एओ, अहो, हो, एजी, अजी, एया हे।

जइसे :-

1. ए ! टूरा। एति आ।
2. ए जी! तोर लउठी ओमेर परे हे।
3. अगा बबा ! तुमन कहाँ जात हो ?
4. एगो ! चल जेवन करबे।
5. एवो नोनी के दाई !
6. अवो रमौतीन! राजू ल पठो तो।

शब्द रचना

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी																												
<p>परिभाषा:— दो या दो से अधिक वर्ण मिलकर किसी अर्थ को स्पष्ट करते हैं तो वह शब्द होता है। जैसे— घर, जल, कमल, कलश आदि। शब्दों के प्रकार :—</p> <p>1. उत्पत्ति के आधार पर शब्द भेद</p> <table><tr><td>तत्सम शब्द</td><td>तद्भव शब्द</td><td>देशज शब्द</td><td>विदेशज शब्द</td></tr><tr><td>कर्ण</td><td>कान</td><td>पगड़ी</td><td>टिकिट</td></tr><tr><td>ग्राम</td><td>गाँव</td><td>थैला</td><td>दुकान</td></tr><tr><td>आम्र</td><td>आम</td><td>गाड़ी</td><td>पेन</td></tr></table> <p>2. रचना (बनावट) के आधार पर शब्द भेद</p> <table><tr><td>मूल या रूढ़ शब्द</td><td>यौगिक शब्द</td><td>योगरूढ़</td></tr><tr><td>घर</td><td>पाठशाला</td><td>पंकज</td></tr><tr><td>फल</td><td>राजपुत्र</td><td>नीलकंठ</td></tr><tr><td>दूध</td><td>रसोईघर</td><td>लम्बोदर</td></tr></table> <p>3. अर्थ के आधार पर शब्द भेद</p> <p>एकार्थी शब्द:— भारत, जनवरी, हिन्दी, गाय।</p> <p>अनेकार्थी शब्द:— पत्र — पत्ता, चिट्ठी। कर — हाथ, टेक्स।</p> <p>पर्यायवाची या समानार्थी शब्द:— ईश्वर — प्रभु, परमात्मा, भगवान। रात — निशा, रजनी, रात्रि।</p> <p>विपरीतार्थक (विलोम) भाव:— रात — दिन हानि — लाभ</p>	तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	देशज शब्द	विदेशज शब्द	कर्ण	कान	पगड़ी	टिकिट	ग्राम	गाँव	थैला	दुकान	आम्र	आम	गाड़ी	पेन	मूल या रूढ़ शब्द	यौगिक शब्द	योगरूढ़	घर	पाठशाला	पंकज	फल	राजपुत्र	नीलकंठ	दूध	रसोईघर	लम्बोदर	<p>परिभाषा:— दू या दू ले जादा आखर मिलके कोन्हो अरथ ला परगट करथे त विहि हा सब्द होथे। जइसे— फर, जर, हमर, तुँहर आदि। सब्द दू किसम ले होथे —</p> <p>1. सारथक सब्द:— अमली, आमा, आज्ञा, आजी, बबा।</p> <p>2. निररथक (फालतू) शब्द:— माआ, मकल, बाब।</p> <p>सब्द रचना खातिर उपसर्ग</p> <p>1. तत्सम अउ तद्भव उपसर्ग</p> <p>अ — अकाम (कार्य से रहित), असमझ (नासमझ), असाध (असाध्य)</p> <p>अइत — अइताचार (अत्याचार)</p> <p>अन — अनचिन्हार (अपरिचित), अनचेंतहा (असावधान)</p> <p>स — सभाव (स्वभाव), सरूप (स्वरूप)</p> <p>2. देसी उपसर्ग</p> <p>अक— अकबक (स्तब्ध, हक्का-बक्का)</p> <p>कठ— कठबेटा (सौतेला बेटा)</p> <p>कर— करलई (विलाप, क्रंदन), करजीबा (जी भर कर रोनेवाला)।</p> <p>दर— दरचबहा (दरदरा), दरचुरा (अधपक्का)</p> <p>3. बिदेसी उपसर्ग</p> <p>अइन— अइनजबानी (भरी जवानी), अइनबेरा (ठीक समय पर)</p> <p>कम— कमउमर (कमउम्र), कमजोर (कमजोर)</p> <p>सर— सरकार (मालिक), सरपंच (मुखिया)</p> <p>हाप— हापपेन्ट (हाफपैन्ट), हापसट (हाफ शर्ट)</p>
तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	देशज शब्द	विदेशज शब्द																										
कर्ण	कान	पगड़ी	टिकिट																										
ग्राम	गाँव	थैला	दुकान																										
आम्र	आम	गाड़ी	पेन																										
मूल या रूढ़ शब्द	यौगिक शब्द	योगरूढ़																											
घर	पाठशाला	पंकज																											
फल	राजपुत्र	नीलकंठ																											
दूध	रसोईघर	लम्बोदर																											

4. प्रयोग के आधार पर शब्द भेद

सामान्य शब्द: — खाना, मेहनत, लड़का, अध्यापक।

तकनीकी शब्द: — प्रबंधन, अन्वेषण, कम्प्यूटर, डाटा।

4. सब्द बनाय खातिर प्रत्यय

अंग — झोलंग (झोले के समान, ढीला-ढाला)

अइया, वइया— जवइया (जानेवाला), बतइया (बतानेवाला)

अइता — करमइता (कर्म करनेवाला)

अउका — ठउका (ठीक)

मान — हिनमान (अपमान), कोपमान (कोपपूर्ण)

शब्द रूप

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
रूप या शब्द रूप किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्द को कहते हैं। शब्दों के दो रूप होते हैं। एक तो शुद्ध रूप जो कोश में मिलते हैं और दूसरा वह रूप जो किसी प्रकार के संबंध सूत्र से युक्त होते हैं। दूसरा वाक्य में प्रयोग के योग्य रूप ही 'पद रूप' या 'शब्द रूप' कहलाता है।	कोनो वाक्य मे आए सब्द ल सब्द रूप कहिथे। सब्द के दू रूप होथे पहिली शुद्ध रूपअ ऊ दूसरइया वाक्या के हिसाव ले परयोग म आए सब्द। परयोग म आए सब्द मन लाही 'पद रूप' नइते 'सब्द रूप' कहिथे। छत्तीसगढ़ी म संज्ञा सब्द मन के रूप रचना कारक चिनहा (परसर्ग) लगाके करे जाथे।
छत्तीसगढ़ी से संज्ञा शब्दों की रूप रचना परसर्ग लगाकर की जाती है। छत्तीसगढ़ी में प्रयुक्त कारक चिन्ह परसर्ग है।	
विभक्ति	एकवचन/बहुवचन
प्रथमा	हर
द्वितीया	ला
तृतीया	ले (कारण, मारे, संग सेती, बूते

चतुर्थी	ला, बर, लिए, खातिर
पंचमी	ले
षष्ठी	के/कर
सप्तमी	मा, में, करा

संधि

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
<p>दो वर्णों के मेल से जो विकास (परिवर्तन) उत्पन्न होता है उसे संधि कहते हैं। जैसे :- राम + अवतार = रामावतार छत्तीसगढ़ी में हिन्दी भाषा की तरह ही तीन प्रकार की संधि माने गए हैं।</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि <p>1. स्वर संधि :- जब स्वर वर्ण के बाद कोई दूसरा स्वर के आने से शब्द में परिवर्तन होता है, तब वहाँ स्वर संधि होता है जैसे :- राम + आधार = रामाधार (अ + अ = आ) यहाँ अ + अ मिलकर आ बना रहा है।</p>	<p>दू आखर के मिले ले जेन बिकार (बदलाव) होथे उही ल संधि कहिथे। जइसे : गज अऊ आनंद = गजानंद छत्तीसगढ़ी में संधि तीन प्रकार के माने गे हे।</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि 3. विसर्ग संधि <p>1. स्वर संधि : - जब स्वर आखर के बाद कोनो दूसर स्वर के आए ले शब्द में बदलाव हो जाथे त उहाँ स्वर संधि होथे। जैसे : राम + आधार = रामाधार (अ + अ = आ) यहाँ अ + अ मिलकर आ बना रहा है।</p>